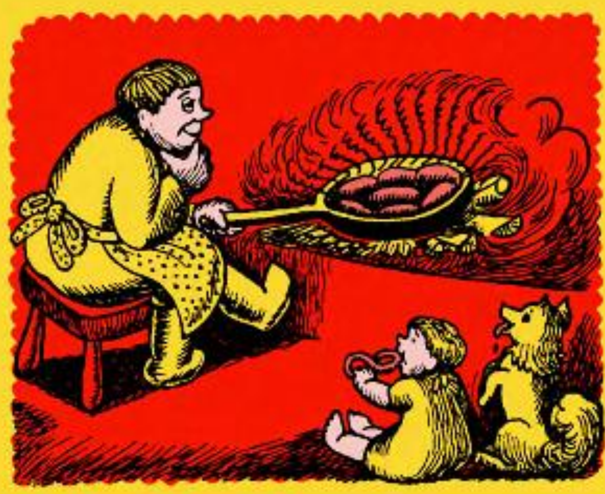
जो बीत चुका उसे भूल जाओ

उस आदमी की कहानी

जिसे घर के काम से प्यार था



वेंडा गैग

मेरे किसान पूर्वजों को समर्पित

जो बीत चुका उसे भूल जाओ

उस आदमी की कहानी

जिसे घर के काम से प्यार था





यह एक पुरानी कहानी है. जब में छोटी बच्ची थी तब मेरी दादी ने मुझे यह कहानी सुनाई थी. जब दादी छोटी थीं तब उनके दादाजी ने उन्हें यह कहानी सुनाई थी. उनके दादाजी को यह कहानी बचपन में उनकी माँ ने बोहेमिया में सुनाई थी. उन्होंने यह कहानी कहाँ सुनी यह मुझे पता नहीं. पर असल में यह बहुत पुरानी कहानी है. मेरी दादी ने मुझे यह कहानी इस तरह सुनाई. उसका नाम है जो

बीत चुका चुका, उसे भूल जाओ ....

जो बीत चुका उसे भूल जाओ

उस आदमी की कहानी

जिसे घर के काम से प्यार था



उस आदमी का नाम फ्रित्जल था.

उसकी पत्नी का नाम लीएसी था.

उनकी एक छोटी बच्ची थी

जिसका नाम था काइंडली.



उनके कुत्ते का नाम था स्पिट्ज.

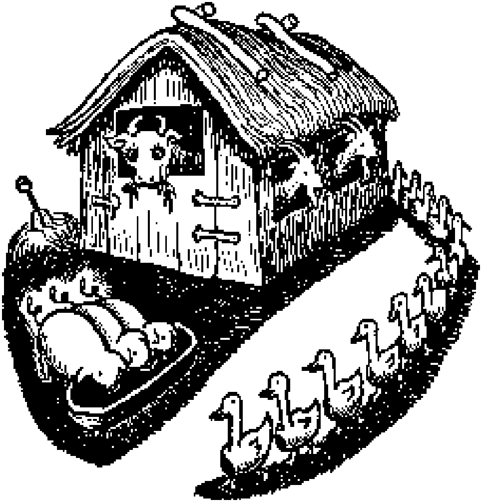
उनकी एक गाय, दो बकरियां,

तीन सूअर और एक दर्जन बत्तखें थीं.

यह उनकी कुल संपत्ति थी.

वो ज़मीन के एक टुकड़े पर रहते थे

और उसी ज़मीन पर काम करते थे.





फ्रित्जल ज़मीन की जुताई करता, बीज बोता और खरपत साफ़ करता. वो घास काटकर उसे धूप में सुखाता और फिर उसके ढेर बनाकर रखता था. हर दिन फ्रित्जल को बहुत मेहनत करनी पड़ती थी.



दूसरी ओर लीएसी घर साफ़ करती, सूप बनाती, दूध से मक्खन निकालती, खलिहान की सफाई करती और छोटी बच्ची की देखभाल करती. लीएसी भी दिन भर खूब मेहनत करती थी.

दोनों बड़ी मेहनत करते थे. पर फ्रित्जल को लगता था कि वो अपनी पत्नी से ज्यादा मेहनत करता है. शाम को जब वो खेत से घर लौटता तो सबसे पहले वो अपने चेहरे को एक बड़े लाल रुमाल से पोंछता और फिर कहता, “आज बाहर कितनी गर्मी थी और मुझे कितना कठिन काम करना पड़ा. लीएसी तुम्हें कुछ अंदाज नहीं है कि आदमी को दिन में कितना काम करना पड़ता है! उसके मुकाबले तुम्हारा काम बहुत कम और आसान है!”

“घर का काम भी आसान नहीं होता,” लीएसी ने कहा.

“घर का काम एकदम आसान होता है,” फ्रित्जल चिल्लाया. “थोड़ा सा इधर-उधर चलीं, कुछ छोटा-मोटा काम कर लिया, बस हो गया. घर का काम मेहनत का नहीं होता.”

“नहीं फ्रित्जल, घर का काम इतना आसान नहीं है,” लीएसी ने दुबारा कहा.



“देखो कल हम अपने-अपने काम की अदला-बदली करेंगे. तुम मेरा काम करना, मैं तुम्हारा काम करूंगी. मैं खेत में जाकर घास काटूँगी, और तुम घर में रहकर छुटपुट काम करना. अगर तुम तैयार हो, तो कल हम अपने रोल बदल सकते हैं?”



फ्रित्जल को वो बाद अच्छी लगी. उसे लगा वो घास में लेटा रहेगा और उनकी छोटी बेटी काइंडली वहां धूप में खेलती रहेगी. इससे आसान भला क्या हो सकता है? उसने सोचा. फिर बाद में वो दही बिलोकर मक्खन निकालेगा. बाद में कुछ सूप बनाएगा और थोड़ा खाना भी. यह सब काम आसान होगा!

हाँ वो ज़रूर रोल अदला-बदली करना चाहेगा!



अगले दिन लीएसी ने सुबह कुछ भी समय बेकार नहीं किया. उसने एक हाथ में पानी का लोटा उठाया और दूसरे कंधे पर घास काटने का हंसिया रखा.

उस समय फ्रित्जल कहाँ था? वो किचन में अपने लिए लज़ीज़ नाश्ता –पकौड़े तल रहा था. वो हैंडल वाली एक कढ़ाई को आग के ऊपर पकड़े था जिसमें गर्म तेल में पकौड़े तल रहे थे. फ्रित्जल अपने विचारों में खोया था.

“इसके बाद मैं एक गिलास सेब का रस पियूंगा,” वो उसके बारे में सोच रहा था. “गरमा-गरम पकौड़ो के साथ सेब का रस पीने में कितना मज़ा आएगा!”

फिर वो उसके बारे में तुरंत अमल करने निकला.

फ्रित्जल ने आग के पास कढ़ाई रखी और फिर सेब के रस को लेने नीचे तहखाने में गया. वहाँ पर एक ड्रम में सेब का रस रखा था.



उसने ड्रम का ढक्कन खोला और सेब के रस को अपने मग में भरते हुए देखा. मग में से झाग उठ रहे थे और उन्हें देखने में फ्रित्जल को बड़ा मज़ा आ रहा था.

अरे! किचन में से वो क्या आवाज़ आ रही थी? क्या स्पिट्ज कुत्ता पकोड़े खा रहा था? बिल्कुल सही! जब फ्रित्जल किचन में पहुंचा तब कुत्ता कुछ पकोड़े मुंह में दबाए किचन के दरवाज़े के बाहर भाग रहा था!

फ्रित्जल ने कुत्ते को कई
बार पुकारा, “रुको! रुको!





पर कुत्ता रुका नहीं! फ्रित्जल दौड़ा, स्पिट्ज भी दौड़ा. फ्रित्जल तेज़ दौड़ा, स्पिट्ज उससे भी तेज़ दौड़ा. नतीजा क्या हुआ? फ्रित्जल रेस में हार गया और वो कुत्ते को पकड़ नहीं पाया.

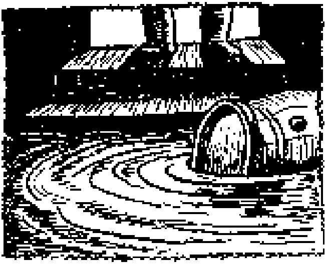


"चलो छोड़ो! जो बीत चुका, उसे भूल जाओ,"
फ्रित्जल ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा.
फिर वो वापिस आया और उसने बड़े लाल
रुमाल से अपना मुंह पोछा.



पर इस बीच सेब के रस का क्या हुआ? क्या उसने सेब के रस के ड्रम का ढक्कन वापिस लगाया था? नहीं, वो ढक्कन लगाना भूल गया था – क्यूंकि ड्रम का ढक्कन अभी भी उसके हाथ में ही था.

बड़ी तेज़ी से फ्रित्जल तहखाने में वापिस दौड़ा. पर तब तक बहुत तबाही हो चुकी थी.



उसका छोटा मग तो सेब के रस से कब का भर चुका था पर अब पूरा तहखाना भी सेब के रस से भर गया था.

फ्रित्जल की गलती ने तहखाने को सेब के रस से भर दिया था. फिर उसने हताश होकर कहा, “जो बीत चुका, उसे भूल जाओ,”

पर अब वक्त था क्रीम को बिलोकर उससे मक्खन निकालने का. फ्रित्जल ने एक बाल्टी में क्रीम भरी और फिर वो उसे पेड़ के नीचे ले गया. वहां उसने पूरे ज़ोर से क्रीम को मथना शुरू किया. पास ही में फूलों की क्यारी में उसकी बेटी काइंडली खेल रही थी.

आसमान नीला था और सूरज की सुनहरी किरणें फूलों और घास पर थिरक रही थीं.

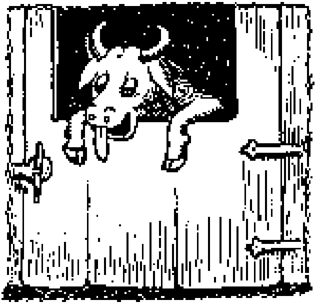
“मौसम तो बड़ा सुहाना है,” फ्रित्जल ने सोचा. “अब मैं अपने थके पैरों को कुछ आराम दे सकता हूँ. ज़रा रुको!



पर गाय का क्या हुआ?
उसके बारे में तो फ्रित्जल बिल्कुल भूल ही गया था. सुबह से बिचारी गाय ने एक बूँद पानी तक नहीं पिया था!”



फिर लम्बे डग भरता हुआ फ्रित्जल एक बाल्टी पानी लेकर गाय के पास दौड़ा. बेचारी गाय वाकई में बहुत प्यासी थी. प्यास के मारे उसकी जीभ मुंह से बाहर लटक रही थी.



कोई भी देखकर बता सकता
था कि गाय बहुत भूखी भी
थी. इसलिए फ्रित्जल गाय को
खलिहान से हरी घास के
मैदान में ले गया.

पर रुको! उसे अपनी बेटी काइंडली का भी तो ख्याल रखना था. अगर वो बाहर मैदान में गाय को लाया तो फिर काइंडली को कौन देखेगा?

इसलिय फ्रित्जल ने गाय को मैदान में नहीं लाने का निर्णय लिया. उसने गाय को छत पर रखने की सोची. हाँ छत पर! छत क्यों? क्योंकि फ्रित्जल के घर की छत पर हरी घास उगी थी. छत पर जंगली फूल भी खिले थे.

गाय को छत पर ले जाना उतना मुश्किल नहीं था जितना तुम सोच रहे हो.



फ्रित्जल का मकान एक छोटे टीले से सटकर लगा था. इसलिए गाय को थोड़ा ढलान चढ़ाकर छत पर ले जाना कोई मुश्किल काम नहीं था. फ्रित्जल ने जल्दी ही गाय को घास चरने छत पर छोड़ दिया.

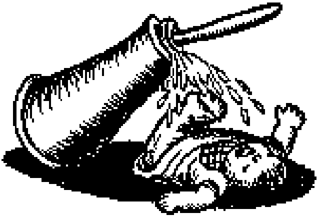
गाय को भी छत के ऊपर अच्छा लगा और वो वहां की मुलायम हरी घास खाने लगी. इसलिए फिर फ्रित्जल मक्खन निकालने के लिए वापिस लौटा.



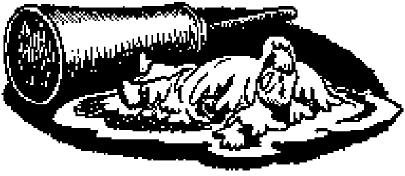
वहां उसने देखा कि उसकी बेटी काइंडली मक्खन निकालने वाले बड़े बर्तन पर चढ़ रही थी और वो बर्तन एक ओर झुक रहा था!



फिर बर्तन गिरा!



और सारी क्रीम हरी घास में बह गई!



काइंडली भी क्रीम से लथपथ हो गई.

“यानि सारा-का-सारा मक्खन बरबाद हो गया,” फ्रित्जल ने कहा. फिर उसने कई बार अपनी आँखें खोलीं और बंद कीं. अंत में उसने अपने कंधे उचकाते हुए कहा, “जो बीत चुका, उसे भूल जाओ.”

उसके बाद फ्रित्जल ने अपनी बेटी को उठाया और उसे सूखने के लिए सूरज में रखा. पर अब तक सूरज आसमान में काफी ऊपर चढ़ चुका था. लगभग दोपहर हो चुकी थी. जल्दी ही उसकी पत्नी लिएसी खाने के लिए घर आएगी.

यह सोचकर फ्रित्जल तेज़ी से बगीचे की तरफ बढ़ा. वहां से उसने कुछ आलू, प्याज, गाजर और पत्तागोभी, सेम, शलगम आदि सब्जियां तोड़ी.

“मैं थोड़ी-थोड़ी सभी सब्जियां डालूँगा. उससे बहुत स्वादिष्ट सूप बनेगा,” फ्रित्जल ने कहा. किचन जाते समय उसके दोनों हाथ सब्जियों से भरे थे इसलिए वो बगीचे का गेट भी बंद नहीं कर पाया.





फिर वो किचन की बेंच पर बैठकर सब्जियों को छीलने और काटने लगा. वो बड़े मोटे-मोटे छिलके उतार रहा था.



तभी ऊपर से बहुत ज़ोर की आवाज़ आई. उसे सुनकर फ्रित्जल एकदम कूदा. "अरे! वो गाय तो छत से फिसलकर नीचे आ रही है. अगर वो नीचे गिरी तो ज़रूर उसकी गर्दन टूट जाएगी."

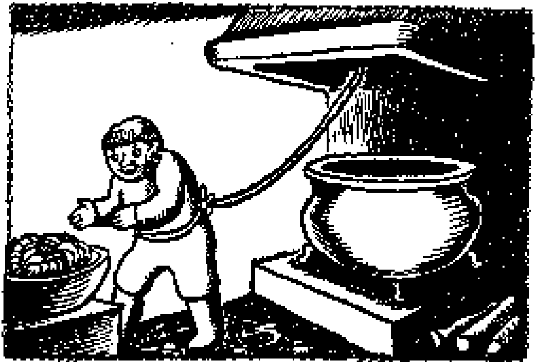
उसके बाद फ्रित्जल छत पर एक मोटी रस्सी लेकर गया. अब ध्यान से सुनो और मैं बताऊंगी कि फ्रित्जल ने रस्सी से क्या किया. उसने रस्सी को गाय के पेट पर चारों तरफ बाँधा. उस रस्सी के दूसरे सिरे को उसने चिमनी से नीच लटकाया. फिर वो कमरे में जाकर चिमनी वाले सिरे को ज़ोरों से खींचने लगा.

उसके बाद? फिर उसने उस सिरे को अपनी कमर में कसकर बाँध लिया. सच में उसने यही किया.

“अरे वाह!” उसने बाद में कहा.



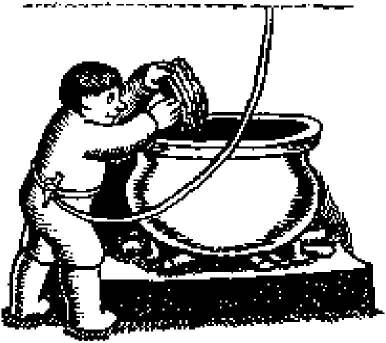
"कम-से-कम अब गाय छत से नीचे तो नहीं गिरेगी." फिर वो अपना काम करते-करते सीटी बजाता रहा.





उसने चूल्हे में कुछ लकड़ियाँ डालीं और फिर उनके ऊपर एक बड़ा बर्तन रखा.

“कोई बात नहीं!” उसने कहा. “चलो अंत में चीज़ें ठीक-ठाक चल रही हैं. जल्द ही हमें अच्छा सूप पीने को मिलेगा!”



“अब मैं बर्तन में सब्जियां डालूँगा.”

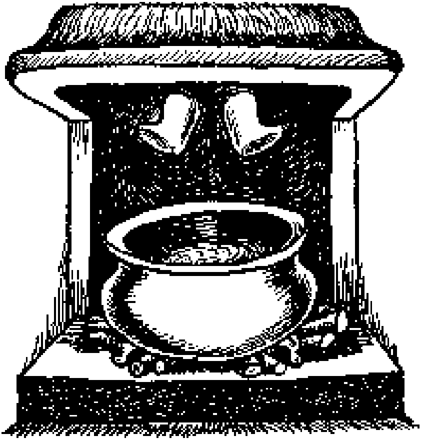
फ्रित्जल ने वो किया.

“फिर उसमें कुछ मसाला और नमक डालूँगा.”

फ्रित्जल ने वो किया.

“फिर अंत में मैं आग जलाऊंगा.”

पर वो चूल्हे की आग कभी नहीं जला पाया. क्योंकि तभी वो गाय छत से फिसल गई और फ्रित्जल चिमनी में खिंचकर चला गया. बेचारा फ्रित्जल! अब वो न नीचे आ सकता था और न ही ऊपर जा सकता था. इसलिए वो चिमनी के बीच में लटका रहा.

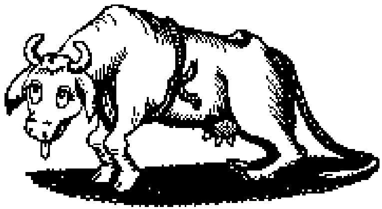




फिर जल्द ही लिएसी दोपहर का खाना खाने घर आई. उसके एक हाथ में पानी का लोटा था और दूसरे कंधे पर घास काटने का हंसिया.

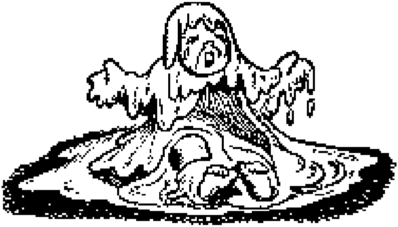
अरे! वो छत से क्या लटका है? गाय? सच में छत से गाय लटकी थी और वो बिल्कुल अधमरी लग रही थी. उसकी आँखें बाहर निकल रहीं थीं और उसकी जीभ मुहं के बाहर लटक रही थी.

लिएसी ने कुछ भी समय बरबाद नहीं किया. उसने अपना हंसिया लिया और झट से रस्सी को काट डाला. उससे गाय फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो गई. कम-से-कम वो जिंदा तो थी. भगवान का बड़ा शुक्र था!



उसके बाद लिएसी ने बगीचे के गेट को खुला हुआ देखा. बगीचे में अब बकरियां, सूअर और बत्तखें सब्जी चर रहे थे. सब्जियां खा-खाकर उनका पेट फटने वाला था. पर बगीचा अब पूरी तरह उजड़ गया था. सब सब्जियां गायब थीं!

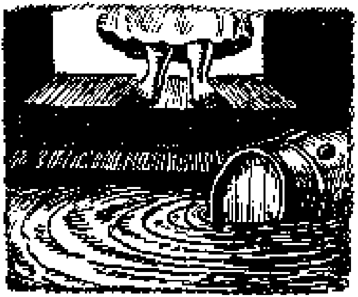




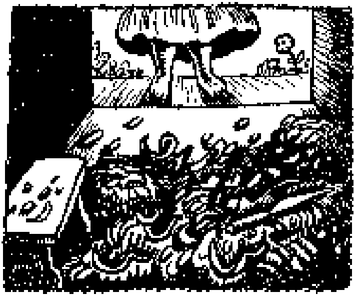
लिएसी कुछ आगे बढ़ी. उसे आगे क्या दिखाई दिया? उसने क्रीम के बर्तन को ज़मीन पर लुढ़का हुआ पाया. उसने अपनी बेटी काइंडली को धूप में पड़े देखा. उसके शरीर पर सब जगह सूखी क्रीम चिपकी थी.



लिएसी कुछ आगे बढ़ी. वहां पर कुत्ता स्पिट्ज मज़े में पकोड़ों का मज़ा ले रहा था. पकोड़े खा-खा कर उसकी तबियत खराब हो गई थी.



उसके बाद लिएसी नीचे तहखाने में गई. वहां पर तो सेब के रस की पूरा ताल बना था.



उसके बाद लिएसी किचन में घुसी.
पूरा फर्श सब्जियों के छिलकों से,
बर्तनों और लकड़ियों से भरा पड़ा था.

अंत में लिएसी ने अलाव पर नज़र डाली. अरे! वहां सूप का बर्तन क्या कर रहा था? बर्तन के मुंह में से भांप निकल रही थी और पानी उफन कर बाहर गिर रहा था. बर्तन में से दो हाथ-पैर बाहर थरथरा रहे थे!



“नहीं! नहीं!” इसका क्या मतलब हो सकता है?” लिएसी देखकर चिल्लाई. उसे पता नहीं था, पर जब उसने बाहर गाय की जान बचाई तो उससे घर के अन्दर फ्रित्जल को कुछ हुआ. रस्सी कटने के बाद फ्रित्जल चिमनी में सीधे नीचे गिरा और फिर चूल्हे के पास सूप के बर्तन में जाकर गिरा.

लिएसी ने तुरंत उन दोनों हाथ-पैरों को बर्तन के बाहर खींचा. फ्रित्जल के बालों में सब्जियां चिपकी थीं.



फ्रित्जल की जेब में पत्तागोभी भरी थी. पर कम-से-कम फ्रित्जल जिंदा तो था. यह क्या कम गनीमत थी!

"नहीं! नहीं फ्रित्जल! क्या इस तरह से घर चलाया जाता है?" लिएसी ने पूछा.

"प्रिय लिएसी!" फ्रित्जल बड़बड़ाया, "तुमने बिल्कुल ठीक कहा था – तुम्हारा काम बिल्कुल आसान नहीं है!"

"देखो शुरू में हरेक काम थोड़ा कठिन ज़रूर लगता है," लिएसी ने कहा, "पर शायद कल तुम्हें यह काम कुछ आसान लगे."

"नहीं! नहीं!" फ्रित्जल ने चिल्लाते हुए कहा. "जो बीत चुका, उसे भूल जाओ. अब घर के काम से तौबा-तौबा! कृपा प्रिय लिएसी – मुझे खेत के काम पर वापिस जाने दो. आगे से मैं कभी यह नहीं कहूँगा कि मेरा काम तुम्हारे काम से ज्यादा कठिन है!"

“ठीक है फ्रित्जल,” लिएसी ने कहा, “अगर तुम्हें सच में ऐसा लगता है तो फिर हम हमेशा के लिए सुख और चैन की जिंदगी जी पाएंगे.”

और फिर वैसा ही हुआ.



अंत